✡ महर्षि पाणीनि की रचना -

÷ अष्टाध्यायी
- 8 अध्याय
- 4 पाद
- 4000 सूत्रों को संक्षेप में लिखा।

✡ महर्षि कत्यायन

÷ 4000 वार्तिकों की रचना की।

✡ महर्षि पतंजलि

÷ पतंजलि ने महाभाष्य की रचना की।

✡ पाणिनी, कत्यायन, पतंजलि } मुनित्रय

✡ भट्टोजि दीक्षित की रचना -

÷ सिद्धान्त कौमुदी

✡ वरदराज की रचना -

÷ लघु सिद्धान्त कौमि कौमुदी

Note:- वर्तमान भाषा का आधार ~~लघु~~ लघु सिद्धान्त कौमुदी के अनुसार है। (इस समय संस्कृत की भाषा ~~लौकिक~~ लौकिक है)

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

माहेश्वर सूत्र

माहेश्वर सूत्रों की संख्या 14 है।

(1) अ, इ, उ, ण्
(2) ऋ, ऌ, क्
(3) ए, ओ, ङ्
(4) ऐ, औ, च्
(5) ह्, य, व, र, ट्
(6) ल, ण्
(7) ञ, म, ङ., ण, न, म्
(8) झ, भ, ञ्
(9) घ, ढ, ध, ष्
(10) ज, ब, ग, ड, द, श्
(11) ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, व्
(12) क, प, य्
(13) श, ष, स, र्
(14) ह ल्

प्रत्याहार

अक
अच् – स्वर (अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ = 9 स्वर संस्कृ
हल् – व्यंजन (ह से ल) 33
यण् – य, व, र, ल
इक् – इ उ ऋ ऌ
को यण य, व, र, ल

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

प्रत्याहार

Note ⇒ गिनते समय हलन्त वाले वर्णों को छोड़ देते हैं।

(1) अच् प्रत्याहार -

(2) अक् प्रत्याहार -

(3) अट् प्रत्याहार

(4) अण् प्रत्याहार

(5) हल् प्रत्याहार

(6) अल् प्रत्याहार

(7) इक् प्रत्याहार

(8) एङ् प्रत्याहार

(9) ऐच् प्रत्याहार

(10) खर् प्रत्याहार

(11) जश् प्रत्याहार

(12) ~~झर्~~ झल् प्रत्याहार

(13) झश् प्रत्याहार

(14) र प्रत्याहार ⇒ र्, ल्

Note1- व्यंजन वर्ण को लिखते समय हलन्त लगाकर लिखते (1)
है। जैसे - र् , ल्

Note2 स्वर वर्णों मे हलन्त नहीं लगता है।
जैसे - अक् (अ, इ, उ, ऋ, ऌ)

Note3- अ, इ, उ, ऋ - इनका ह्रस्व दीर्घ प्लुत होता है। (1)

Note4- ऌ - ह्रस्व, प्लुत

Note5- ए, ओ, ऐ, औ - दीर्घ, प्लुत

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

(4)

★ कुल स्वरों की संख्या 9 है।

∴ अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ

★ उच्चारण के आधार पर स्वर 3 प्रकार के होते हैं।

(1) उदात्त
(2) अनुदात्त
(3) स्वरित

(1) उदात्त स्वर :- ऐसे स्वर जिनका उच्चारण, उच्चारण स्थान के ऊपर के भाग से होता है उन्हें उदात्त स्वर कहते हैं।

(2) अनुदात्त :- ऐसे स्वर जिनका उच्चारण, उच्चारण स्थान के नीचे के भाग से होता है उन्हें अनुदात्त स्वर कहते हैं।

(3) स्वरित :- समाहारः स्वरितः (समाहार-संयोग)
समाहार स्वरित कहलाता है अर्थात् उदात्त और अनुदात्त इन दोनों धर्मों का जहाँ एक संयोग हो।

★ उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर स्वर तीन प्रकार के होते हैं -

(1) ह्रस्व
(2) दीर्घ
(3) प्लुत

(1) ह्रस्व ⇒ इनके उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

(2) दीर्घ → इनके उच्चारण में 2 मात्रा का समय लगता है।

(3) प्लुत → इनके उच्चारण में 3 मात्रा का समय लगता है।

नासिका की सहायता से उच्चारण किये जाने वाले स्वर

(1) अनुनासिक (चाँद)

(2) अननुनासिक (चांद)

अनुनासिक → ऐसे स्वर जिनका उच्चारण मुख और नासिका दोनों की सहायता से किया जाता है अनुनासिक कहलाते हैं।

जैसे → अनुनासिक = मुख + नासिका

↳ आँख, चाँद

उच्चारण स्थान

(1) अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः - कण्ठ्य
अ, कवर्ग ह विसर्ग, आ

(2) इचुयशानां तालुः - तालव्य
इ, चवर्ग, श, य, ई

(3) ऋटुरषाणां मूर्धा - मूर्धन्य
ऋ, टवर्ग, र, ष

(4) लृतुलसानां दन्ता - दन्त्य
लृ, तवर्ग, ल, स

(5) उपूपध्मानीयानां ओष्ठौ - ओष्ठ्य
उ, पवर्ग, उपध्मानीय

(6) वकारस्य दन्तोष्ठम
व का उच्चारण स्थान दन्तोष्ठ है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

(7) अन्तस्थ - यण्
य, व, र, ल

(8) ऊष्म - शल्
श, ष, स, ह

(9) अनुस्वार - नासिका

(10) अनुनासिक - मुख + नासिका

(11) अल्पप्राण → विषम + यण्
135 + यण

(12) महाप्राण → सम + शल्
२४ + शल्

✡ ~~अल्पप्रा~~ अल्पप्राण → जिन वर्णों के उच्चारण में अल्प/कम वायु की आवश्यकता होती है उन्हें अल्पप्राण कहते हैं। जैसे- प्रत्येक वर्ग के प्रथम, तृतीय, पंचम; य, व र, ल।

✡ महाप्राण - जिन वर्णों के उच्चारण में अधिक वायु की आवश्यकता होती है उसे महाप्राण कहेंगें। जैसे- प्रत्येक वर्ग के द्वितीय चतुर्थ और श, ष, स ह।

~~✡ संयुक्त व्यंजन~~

ए दो तो कण्ठ तालु
ए और ऐ

ओ दो तो: कण्ठोष्ठम
औ और औ

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

★ संयुक्त व्यंजन

क्ष = क् + ष + अ

त्र = त् + र + अ

ज्ञ = ज् + ञ + अ

श्र = श् + र + अ

दीपक कुमार शर्मा
8859637150
मथुरा वृन्दावन
दीपक कुमार शर्मा
DEEPAK KUMAR SHARMA
MATHURA VRINDAVAN- 8859637150
दीपक कुमार शर्मा
8859637150
मथुरा वृन्दावन

For Best F

सान्धि

÷ सान्धि का अर्थ है मेल।

÷ संस्कृत भाषा में शब्द किसी स्वर अथवा व्यंजन से आरम्भ होकर किसी स्वर अथवा व्यंजन अथवा विसर्ग में समाप्त होते है।

÷ जब दो शब्द निकट आते हैं तो एक दूसरे की निकटता के कारण पहले शब्द के आन्तिम वर्ण में अथवा दूसरे शब्द के पहले वर्ण में अथवा दोनों में कुछ परिवर्तन हो जाता है इसी परिवर्तन को सान्धि कहते है। ~~अर्थात्~~

÷ अर्थात् दो शब्दों के निकट आने से जो मेल होता है उसे सान्धि कहते है।

सान्धि के प्रकार

(1) स्वर
(2) व्यंजन
(3) विसर्ग

(1) स्वर सान्धि - शब्दों का ऐसा मेल जहाँ प्रथम शब्द का आन्तिम वर्ण तथा द्वितीय शब्द का प्रथम वर्ण स्वर हो तो स्वर सान्धि होगी।
जैसे - हिम + आलयः = हिमालयः

(2) व्यंजन सान्धि - शब्दों का ऐसा मेल जहाँ प्रथम शब्द का आन्तिम वर्ण तथा दितीय शब्द का प्रथम वर्ण व्यंजन हो अथवा दोनो में से कोई एक स्वर हो या दूसरा व्यंजन हो तो विसर्ग सान्धि होगी।
जैसे - सत् + चित्

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

(3) विसर्ग सान्धि - शब्दों का ऐसा मेल जहाँ प्रथम शब्द के अन्त में विसर्ग (:) हो एवं द्वितीय शब्द का प्रथम वर्ण स्वर अथवा व्यंजन हो उसे विसर्ग सान्धि कहते हैं।

जैसे- हरिः + शेते = हरिश्शेते

हरिः + चन्द्रः = हरिश्चन्द्रः

स्वर सान्धि के प्रमुख प्रकार हैं -

दीर्घ सान्धि
गुण सान्धि
वृद्धि सान्धि
यण् सान्धि
अयादि सान्धि
पूर्वरूप सान्धि
पररूप सान्धि

(1) दीर्घ सान्धि

सूत्र - अकः सवर्णे दीर्घः
- सवर्ण वर्ण (अ का सवर्ण - आ होगा)
- अक - अ, इ, उ, ऋ, ऌ

जब ह्रस्व अथवा दीर्घ अक - अ, इ, उ, ऋ, ऌ से परे/बा ह्रस्व अथवा दीर्घ अक-आ, ई, ऊ, ॠ आये तो दोनों के स्थान में सवर्ण दीर्घ हो जाता है।

अक + अक = दीर्घ अक

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

(5)

जैसे- हिम + आलयः

हि म अ + आ ल यः

↓

आ

हि मा ल यः

अ + अ
आ + अ
अ + आ
आ + आ
→ T

जैसे- गिरीशः

गिरि + ईशः

गि र इ + ई शः

↓

गि र ई शः

इ + ई
इ + इ
ई + इ
ई + ई
→ ी

जैसे- दैत्यारिः

दैत्य + अरिः

जैसे- विद्यातुरः

विद्या + आतुरः

जैसे- परमार्थः

परम + आर्थः

जैसे- धर्मार्थः

धर्म + अर्थः

जैसे- श्रीशः

श्री + ईशः

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"

Scanned by CamScanner

गुण सन्धि

सूत्र :- आद्गुणः

जब अ वर्ण के पश्चात स्वर हो तो पूर्वपर (पहले - बाद) दोनों के स्थान पर गुण आदेश हो जाता है।

अ/आ + इ/ई = ए
अ/आ + उ/ऊ = ओ
अ/आ + ऋ/ॠ = अर्
अ/आ + ऌ = अल्

जैसे:- रमा + ईशः
आ + ई
↓
ए
रमेशः

जैसे:- गण + ईशः
अ + ई
↓
गण् ए शः
गणेशः

जैसे - उप + इन्द्रः
अ + इ
↓
ए
उपेन्द्रः

जैसे - गगन + ऊर्ध्वम्
गगनोर्ध्वम्

जैसे⇒ गज + इन्द्रः
अ + इ
↓
ए
गजेन्द्रः

जैसे⇒ नव + ऊढ़ा
अ + ऊ
↓
ओ
नवोढ़ा

जैसे⇒ महा + ईश्वरः
आ + ई
↓
ए
महेश्वरः

जैसे⇒ गंङ्गा + उदकम्
आ + उ
↓
ओ
~~अंग्गो~~ गंङ्गोदकम्

Note:- अदेङ् गुण
↙ ↘
अत् एङ् ह्रस्व अ, ए, ओ की गुण संज्ञा होती है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

जैसे → महा + ऋषिः

आ + ऋ

↓

अर्

महर्षिः

जैसे → तत + लृकारः

अ + लृ

↓

अल्

तवल्कारः

जैसे → महा + लृकारः

आ + लृ

↓

अल्

महल्कारः

जैसे ⇒ नर + इन्द्रः

अ + इ

↓

ए

नरेन्द्रः

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"

Scanned by CamScanner

जैसे → महा + ऋषिः

आ + ऋ

↓

अर्

महर्षिः

जैसे → तत + लृकारः

अ + लृ

↓

अल्

तवल्कारः

जैसे → महा + लृकारः

आ + लृ

↓

अल्

महल्कारः

जैसे ⇒ नर + इन्द्रः

अ + इ

↓

ए

नरेन्द्रः

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"

Scanned by CamScanner

वृद्धि सन्धि

सूत्र - वृद्धिरेचि

जब ह्रस्व अथवा दीर्घ अ से परे / पश्चात / बाद ए अथवा ऐ आये या ओ अथवा औ आये तो क्रमशः ऐ और औ हो जाता है।

अ / आ + ए / ऐ = ऐ
अ / आ + ओ + औ = औ

उदा०:-

(1) कृष्ण + एकत्वम्
अ + ए
ऐ
कृष्णैकत्वम्

(2) देव + ऐश्वर्यम्
अ + ऐ
ऐ
देवैश्वर्यम्

(3) विद्या + ऐश्वर्यम्
आ + ऐ
ऐ
विद्यैश्वर्यम्

(4) गंगा + एषा
आ + ए
ऐ
गंगैषा

(5) गंगा + ओघः
आ + ओ
औ
गंगौघः

Note:- वृद्धिरादैच्
Note: वृद्धिः आत् ऐ औ
दीर्घ आ, ऐ, औ की वृद्धि संज्ञा होगी।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

यण् सन्धि

सूत्र - इकोयणाचि

इकः यण् अच्

	य	व	र	ल
इक् =	इ,	उ,	ऋ,	ऌ

इक् + अच्

⇓

यण्

यदि इ, उ, ऋ, ऌ से परे उनसे भिन्न स्वर हो तो उन्हें क्रमशः य, व, र, ल हो जाता है।

उदा०:-

(1) सुधी + उपास्यः

ई + उ

सुध् य् पास्यः

सुध्युपास्यः

(2) मद्वरिः

मधु + अरिः

उ + अ

व

(3) धात्वंशः

धातृ + अंशः

ब्रह्मा

धात् र् अ ंशः

त्र

(4) सख्युचितम्

सखी + उचितम्

इ + उ

य्

(5) सु + आगतम्

स उ + आ गतम्

वा

स्वागतम्

(6) लाकृतिः

ऌ + आकृतिः

ऌ + आ

लाकृतिः

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"

Scanned by CamScanner

अयादि सन्धी

ए	ओ	ऐ	औ
अय्	अव्	आय्	आव्

सूत्र :- एचोऽयवायावः

(एच्+स्वर) अय् अव् आय् आव्

यदि ए, ओ, ऐ, औ से परे भिन्न स्वर हो तो उन्हें क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् हो जाता है।

ए + कोई भिन्न स्वर = अय्
ओ + = अव्
ऐ = आय्
औ = आव्

उदा:-

(1) नयनम्
ने + अनम्
न ए + अ नम्
अय्
नयनम्

(2) भो + अनम्
भ् ओ + अ नम्
अव्
भवनम्

(3) नायकः
नै + अक
न ऐ + अ कः
आय्
नायकः

(4) पावकः
पौ + अकः
औ + अ
आव्

(5) भवति
भो + अति
ओ + अ
अव्

(6) मुनये
मुने + ए
ए + ए
अय्
मुनय

(7) हरे + ए
ए + ए
अय्
हरये

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

पूर्वरूप सान्धि

सूत्र :- एङ: पदान्तादति
↓ ↓
ए, ओ पद के अन्त में

पद के अन्त मे ए या ओ हो और उसके बाद ह्रस्व अ हो तो अ को पूर्व रूप आदेश हो जाता है।

जैसे → हरे + अत
ए + अ
|
ऽ
हरेऽत

जैसे → विष्णो + अत
ओ + अ
↓
विष्णोऽव

पररूप सान्धि

सूत्र :- एङि पररूपम्
↓
ए ओ

अ वर्ण से समाप्त होने वाले उपसर्ग से परे यदि एङादि धातु (एङ् प्रत्याहार - ए ओ) हो तो अ वर्ण एंव एङ् के स्थान पर पररूप एकादेश हो जाता है।

जैसे → प्र + एजते
पूर्व अ + ए जते
↓
ए
प्रेजते

जैसे → उप + ओषति
अ + ओ
↓
ओ
उपोषति

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

संख्या

एकोनविंशतिः
एक + ऊन
अ + ऊ
एकोन

	पुं०	स्त्री०	नपुं०
1	एकः	एका	एकम्
२	द्वौ	द्वे	द्वे
3	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
4	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि

5 पञ्च
6 षट्
7. सप्त
8. अष्ट
9. नव
10. दश
11. एकादश
12. द्वादश
13. त्रयोदश
14. चतुर्दश
15. पञ्चदश
16. षोडश
17. सप्तदश
18. अष्टादश
19. नवदश / एकोनविंशति
20. विंशतिः

30. त्रिंशत्
40. चत्वारिंशत्
50. पञ्चाशत्
60. षष्टिः
70. सप्ततिः
80. अशीतिः
90. नवतिः
100. शतम्

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

व्यंजन सन्धि (हल्-सन्धि)

सूत्र :- स्तोः श्चुनाश्चुः । सन्धि का नाम – श्चुत्व सन्धि

स्तु श्चु श्चु

स/त वर्ग श/च वर्ग

यदि स और त वर्ग के बाद यदि श और च वर्ग आये तो स के स्थान पर श और त वर्ग के स्थान पर च वर्ग हो जाता है।

जैसे:-

सत् + जनः = सज्जनः

रामस् + शेते = रामस + शेते

सत् + चित् = सच्चित्

शरत् + छविः = शरच्छविः

कस् + चित् = कश्चित

शरत् + चन्द्रः = शरच्चन्द्रः

महत् + ज्वालम् = महज्ज्वालम्

उत् + चारणम् = उच्चारणम्

निस् + चयः = निश्चयः

Note

स् को श

स + च = श्च

त् को च।

न् को ज्।

त् + छ = च्छ

स् + छ = श्च

न् + ज = ज्ज

त् + ज् = च्ज

स् + श = श्श

सन्धि का नाम = ष्टुत्व सन्धि

सूत्र :- स् या त वर्ग से पहले या बाद में ष या ट वर्ग कोई भी हो तो स को ष और तवर्ग को ट वर्ग हो जाता है।

उदा:-

रामष्षष्ठः = रामस् + षष्ठः

रामष्टीकते = रामस् + टीकते । (स् को ष्)

पेष्टा = पेष् + ता (त् को ट्)

तट्टीका = तत् + टिका

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"

Scanned by CamScanner

चक्रिण्ढौकसे = चक्रिन् + ढौकसे (न को ण)

धनुष्टंकार: = धनुस् + टंकार / धनुः + टंकार

उड्डयनम् = उद् + डयनम्

षष्ठ: = षष् + थ:।

सन्धि का नाम → अपदान्त जश्त्व सन्धि

(1) सूत्र:- झलां जश् झशि।

झल् जश् झश्

या

(2) सूत्र:- झलां जशोऽन्ते।

जब प्रथम पद के अन्त मे झल् प्रत्याहार का वर्ण हो और उसके बाद वर्गों के तृतीय और चतुर्थ वर्ण हो तो प्रथम शब्द का आन्तिम वर्ण अपने वर्ग के तृतीय वर्ण में परिवर्तित हो जाता है।

झल् = स्पर्श + शल

क से म तक

(पद के आन्तिम झलों (वर्ग के 1, 2, 3, 4 और ऊष्म) का जश् अपने वर्ग के तृतीय अक्षर होते हैं।

उदा:-

दिक् + गज:

ग

दिग्गज:

आ:- वाग्दानम्

वाक् + दानम्

ग

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"

Scanned by CamScanner

(21)

महज्जीवम् = महत् + जीवम् (त् को ज्)

लब्धाः = लभ् + धाः (भ् को ब्)

वागीशः = वाक् + ईशः

⇓

प्रथम शब्द के अन्त में झल् प्रत्याहार का वर्ण हो तो उसे जश् आदेश हो जाता है। (दूसरा सूत्र से)

ग्रामादायाति = ग्रामात् + आयाति

षड्दर्शनम् = षट् + दर्शनम्

वाग्जालम् = वाक् + जालम्

तद्धनम् = तत् + धनम्

उद्गच्छति = उत् + गच्छति

जगदम्बा = जगत् + अम्बा

सन्धि का नाम - लत्व सन्धि

सूत्रः- तोर्लि

त वर्ग के बाद ल हो तो तवर्ग को भी ल् हो जाता है।

उदाः-

तल्लयः- तत् + लयः (त् को ल्) (उसका नाश)

विद्वांल्लिखति = विद्वान् + लिखति । (न् को ल्)

उल्लेखः = उत् + लेखः । (त् को ल्)

तल्लीला = तत् + लीला । (त् को ल्)

उल्लासः = उत् + लासः । (त् को ल्)

तल्लीनः = तत् + लीनः (त् को ल्)

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"

Scanned by CamScanner

सन्धि का नाम - अनुस्वार सन्धि

सूत्र :- मोऽनुस्वारः

↓

म् + अनुस्वार:

यदि प्रथम पद के अन्त मे म् हो और उसके बाद कोई व्यंजन आये तो म् को अनुस्वार हो जाता है।

उदा:-

हरिं वन्दे = हरिम्+वन्दे

मातरं वन्दे = मातरम् + वन्दे

पत्रं लिखत = पत्रम् + लिखत

सत्यं वद = सत्यम् + वद

सत्वरं धावति = सत्वरम् + धावति

सन्धि का नाम - विसर्ग सन्धि

(1) सूत्र :- विसर्जनीयस्य सः।

विसर्ग के बाद यदि खर् प्रत्याहार का वर्ण हो तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है। (खर् = 1, 2, श, स, ष)

उदा:- विष्णुः + त्राता

↓

स्

विष्णुस्त्राता

उदा:- नमः + ते

↓

स्

नमस्ते

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"

Scanned by CamScanner

(2) सूत्र :- ससजुषो रुः ।

पद के अन्त मे वर्तमान स् के स्थान पर रु आदेश होता है ।

उदा- शिव स् + अर्च्यः
↓
शिव रु + अर्च्यः → शिवोऽर्च्यः

(3) अतोरोरप्लुतादप्लुते ।

यदि अप्लुत अ के बाद यदि 'रु' हो और रु के बाद यदि पुनः ~~अप्लु~~ अप्लुत ओ अ हो तो रु को उ आदेश हो जाता है ।

अप्लुत अ + रु + अप्लुत अ
↓
ह्रस्व/दीर्घ

उदा॰→ शिव रु + अर्च्यः
↓
शिव उ अर्च्यः
शिवोऽर्च्यः

उदा॰→ राम: + अर्च्यः
↓
स
राम रु + अर्च्यः → रामोऽर्च्यः
↓
उ

उदा॰→ नमः + करोति
↓
स
नमस्करोति

उदा॰→ हरि: + शेते
↓
स
हरि स् शेते (ससेपरे तो = श)
हरिश्शेते

उदा॰→ स: + अपि
सोऽपि

उदा॰→ मूर्खोऽपि
मूर्खः + अपि

उदा॰→ देवीरुवाच
देवी: + उवाच
↓
स
↓
रु

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

कारक तथा विभक्ति

कारक की परिभाषा ⇒ 'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्'।
(वाक्य में क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध)

कारक का अर्थ ⇒ 'करोतीति कारकम्'।
(कार्य को करने वाला अर्थात् क्रिया का पूरक)

संस्कृत में कारकों की संख्या 6 है।

कर्ता कर्म च करणं, सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणं, इत्याहुः कारकाणि षट्॥

∴ कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण ये 6 कारक होते हैं। व्यवहार रूप में विभक्तियाँ 7 होती हैं और कारक 8 होते हैं।

विभक्ति, कारक और उनके चिन्ह निम्नवत् हैं –

विभक्ति	कारक	चिन्ह
प्रथमा	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से, द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पंचमी	अपादान	से (अलग होने के अर्थ में)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री
सप्तमी	अधिकरण	में, पै, पर
	सम्बोधन	हे, अरे, भो, ओ, आदि

कारक :- वाक्य में जिन शब्दों का क्रिया के सम्पादन में उपयोग होता है कारक कहलाते हैं।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

∴ क्रिया का सम्पादन जिसके द्वारा या जिसकी सहायता से किया जाय – करण

∴ क्रिया जिसके लिए की जाय – सम्प्रदान

∴ क्रिया जिससे निकले या दूर हो – अपादान

∴ क्रिया जिस स्थान पर हो – अधिकरण

प्रथमा विभक्ति :- प्रथमा विभक्ति का उपयोग शब्द का अर्थ, लिंग, परिमाण & वचन बताने के लिए किया जाता है।

∴ प्रथमा विभक्ति का उपयोग सम्बोधन करने में होता है इसीलिए सम्बोधन को अलग विभक्ति नहीं मानते हैं।

∴ द्वितीया विभक्ति :-

सूत्र → कर्तुरीप्सिततमं कर्म।

↓

कर्तुः ईप्सिततमं कर्म

कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे सर्वाधिक प्राप्त करना चाहे उसे ही कर्म कहते हैं।

दूध से भात खाता है।

पयसा ओदनं भुङ्क्ते

↓

कर्म

सूत्र :- कर्मणि द्वितीया।

∴ दुह् (दुहना), याच् (मांगना), पच् (पकाना), दण्ड् (दण्ड) आदि धातुओं के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

गाय से दूध दुहता है।

गां दोग्धि पयः।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"

Scanned by CamScanner

तण्डुल = चावल

बलिं से पृथ्वी का दान माँगते है।
बलिं याचते वसुधाम्।
द्वितीया

~~सूत्र~~ :- अधिशीङ्स्थासां कर्म।
यदि 'आङ्' उपसर्ग शीङ् (शयन), स्था (बैठना), ठहरना) आस् के पहले लगे हो तो क्रिया के आधार में कर्म कारक होता है। उदा:- हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते।

* तृतीया विभक्ति :-

~~सूत्र~~ साधकतमं करणम्।
क्रिया की सिद्धि में जो कर्ता को सर्वाधिक सहायक होता है वह करण कारक कहलाता है।

सूत्र :- कर्तृ करणयोस्तृतीया।
→ अनुक्त कर्ता और करण में तृतीया विभक्ति होती है।
→ रामः बाणेन बालिं हतवान्। (बाण-करण)
राम ने बाण से बालि को मारा।

~~सूत्र~~ :- येनाङ्ग विकारः।
→ जिस अंग में कोई विकार हो उस अंगवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है।
सः पादेन खञ्जः अस्ति।
वह पैर से लंगड़ा है।

[अनुक्त कर्ता → कर्मवाच्य एंव भाववाच्य में आनेवाला कर्ता]

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

✡ चतुर्थी विभक्ति

~~सूत्रम्~~ कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्

परिभाषा → कर्ता दान क्रिया के द्वारा जिससे सम्बन्ध स्थापित करता है उसे सम्प्रदान कहते है और सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है।

∴ सूत्र :- सम्प्रदाने चतुर्थी।

उदा० → विप्राय गां ददाति

∴ नमः, स्वास्ति, स्वाहा के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

उदा० → देवेभ्यः स्वास्ति। (स्वास्ति = कल्याण)

(2) गणेशाय नमः।

(3) इन्द्राय स्वाहा।

✡ पंचमी विभक्ति

ध्रुवमपाये ऽपादानम्।

ध्रुव अपाय अपादान

निश्चित/स्थिर ↳ विश्लेष या अलग होना

∴ अलग होने के योग में ध्रुव अर्थात जिससे अलग हो रहा है उसे अपादान कहते हैं।

वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।

वृक्षात् पत्रं पतति।

पत्ता गिरना

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"

Scanned by CamScanner

सूत्र :- अपादाने पञ्चमी ।
अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है।

उदा० → माता कुएं से जल लाती है।
माता कूपात् जलं आनयति ।

भीत्रार्थानां भयहेतुः ।
भी त्रै भय हेतु
भय रक्षा धातु के योग में जो भय का कारण है और जिससे रक्षा करनी है उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है।

उदा० → सः चौरात् बिभेति ।
वह चोर से डरता है।
∴ भीम से दुर्योधन को बचाने के लिए ।
उदा० → भीमात् दुर्योधनं त्रातम् ।
पंचमी विभक्ति → अपादान
द्वितीया → कर्म

∴ आख्यानोपयोगे ।
जिस अध्यापक या मनुष्य से विद्या ग्रहण की जाती है, उस पढ़ाने वाले की अपादान संज्ञा होती है।

उदा :- छात्रः अध्यापकात् संस्कृतं पठति ।
छात्रः गुरोः संस्कृतं पठति ।
छात्र अध्यापक से संस्कृत पढ़ता है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

✱ षष्ठी विभक्ति ।

जब किसी शब्द का क्रिया के अतिरिक्त किसी अन्य शब्द से सम्बन्ध बताना होता है तो षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

उदा:- बालकस्य माता आपणं गच्छति।
बालक की माता बाजार जाती है।

÷ षष्ठी हेतु प्रयोगे ।

उदा:- रमेशः अध्ययनस्य हेतोः प्रयागे वसति।
~~षष्ठी~~ षष्ठी

जब हेतु का प्रयोग हो तो ~~षष्ठी~~ विभक्ति, हेतु एवं उसका कारण दोनों में होगी।

✱ सप्तमी विभक्ति ।

आधारो ऽधिकरणम्।
क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं।

सूत्र:- ~~सप्तम्यधिकरणे~~ ।
अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है।

~~यतश्च~~ उदा:- अहं नगरे ~~वसामि~~ ।

यतश्च निर्धारणम्।
जब किसी व्यक्ति या वस्तु को उसके समुदाय से श्रेष्ठ बताया जाता है तो समुदाय वाचक शब्द ~~को~~ सप्तमी या षष्ठी विभक्ति होती है।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

(3)

उदा० कविषु / कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।

उपसर्ग

(1) प्र –
(2) परा =
(3) अप =
(4) सम् =
(5) अनु =
(6) अव् =
(7) निस् =
(8) निर् =
(9) दुस् =
(10) दुर् =
(11) वि =
(12) आ =
(13) आधि –
(14) नि =
(15) अपि =
(16) अति =
(17) सु –
(18) उत् =
(19) अभि =
(20) प्रति =
(21) उप =
(22) परि =

दीपक कुमार शर्मा
8859637150
मथुरा वृन्दावन
दीपक कुमार शर्मा
DEEPAK KUMAR SHARMA
MATHURA VRINDAVAN- 8859637150
दीपक कुमार शर्मा
8859637150
मथुरा वृन्दावन

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

समास

सम् + अस्

↓ ↓

अ धातु

परिभाषा -

समसनं समासः ।

↓

संक्षिप्तीकरण / संक्षेपीकरण

समास के भेद -

(1) केवल समास - (द्वन्द्वश्च)

(2) अव्ययीभाव समास

(3) तत्पुरुष समास → कर्मधारय → द्विगु

(4) द्वन्द्व समास

(5) बहुव्रीहि समास

अव्ययीभाव समास

अव्ययी भाव शब्द का अर्थ है जो अव्यय नहीं था उसका अव्यय हो जाना इसमें प्रथम पद प्रायः अव्यय रहता है और दूसरा संज्ञा शब्द और दोनों मिलकर अव्यय हो जाते हैं ।

पूर्वपद प्रधान, अव्ययी भावः । इसमें पूर्वपद प्रधान होता है।

उदा. -

(1) यथाशक्ति → शक्तिम् अनतिक्रम्य ।

↓

अनतिक्रम्य

(2) यथाकामम् → काममनतिक्रम्य ।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"

Scanned by CamScanner

(3) अव्ययी भाव समास बनाते समय यदि दूसरे पद का अन्तिम वर्ण दीर्घ रहे तो उसे ह्रस्व कर दिया जाता है। यदि अन्त में ए अथवा ऐ है तो उसके स्थान पर 'इ' और ओ अथवा औ हो तो ह्रस्व 'उ' हो जाता है।

उदा० -

(1) उपगङ्गम् ⟶ गंगायाः समीपे।
उप + गङ्गा

(2) उपनदि ⟶ नद्याः समीपे।
उप + नदी

(3) उपवधु ⟶ वध्वाः समीपे।
उप + वधू

(4) उपनु ⟶ नावः समीपे।
उप + नौ
↓
(नाव)

(5) उपराजम् ⟶ राज्ञः समीपे।

(6) आधिहरि ⟶ हरौ इति।

(7) सुभद्रं ⟶ भद्राणां समृद्धिः। (सु = समृद्धिः)

(8) दुर्यवनम् ⟶ यवनानां वृद्धिः। (दुर् - नाश)
↓ ↓
दुर् + यवन

(9) निर्मशकम् ⟶ मशकानाम् अभावः।
निर् + मशकम् मशकनामभावः।
↓
अभाव

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

(10) अतिहिमस्य ⟶ हिमस्य अत्ययः।
↓ (पाले की समाप्ति)
अत्ययः

(11) अतिनिद्रस्य ⟶ निद्रा सम्प्रति न युज्यते।
↓ ↓
अब अच्छी

(12) अनुविष्णुः ⟶ विष्णोः पश्चात्।

तत्पुरुष समास

* तत्पुरुष समास उस समास को कहते हैं जिसमें प्रथम शब्द दूसरे शब्द के विशेषण का कार्य करे। तत्पुरुष समास में उत्तर पद प्रधान होगा।

Note
तत्पुरुष समास → समानाधिकरण (समान + आधि)
→ व्यधिकरण (वि + आधि)

उदा- कृष्णः सर्पः
कृष्णः → विशेषण
सर्पः → विशेष्य

* तत्पुरुष समास में यदि दोनों पदों की विभक्ति एक समान है तो उसे समानाधिकरण तत्पुरुष समास कहते है यदि भिन्न-भिन्न हैं तो व्यधिकरण तत्पुरुष समास कहते हैं।

उदा० → कृष्णं श्रितः ← कृष्णाश्रितः।
उदा० → दुखातीतः → दुखम् अतीतः।
उदा० → हरित्रातः → हरिणा त्रातः।
उदा० → नखभिन्नः → नखैः भिन्नः।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

उदा.→ कुम्भमृत्तिका → कुम्भाय मृत्तिका

उदा.→ चौरभयम् → चौराद् भयम्।

उदा.→ राज्ञः पुरुषः ← राजपुरुषः।

कर्मधारय समास — समानाधिकरण तत्पुरुष कर्मधारय समास की क्रिया समास के दोनो शब्दों को धारण करती है

उदा.- कृष्णसर्पः — कृष्णः सर्पः।

नीलोत्पलम् — नीलम् उत्पलम्।

कापुरुषः / कुपुरुषः → कुत्सितः पुरुषः। (कु→कुत्सित)

यूपदारू → यूपाय दारू। (दारू = लकड़ी)

कुपुत्रः → कुत्सितः पुत्रः।

कुशिष्यः → कुत्सितः शिष्यः।

घनश्यामः → घन इव श्यामः। (घन = बादल, श्याम = काला)

मुखकमलम् → मुखं कमलं इव
मुखं कमलमिव।

द्विगु समास — जब कर्मधारय समास में प्रथम शब्द/पद संख्यावाची हो और दूसरा कोई संज्ञा हो तो उस समास को द्विगु समास कहते हैं।

द्विगु
दो गो गाय

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

उदा०-
पञ्चवटी — पञ्चानां वटानां समाहारः।
पञ्चग्रामम् — पञ्चानां ग्रामाणां समाहारः।
त्रिलोकी — त्रयाणां लोकानां समाहारः।

नञ् तत्पुरुष समास — जब तत्पुरुष में प्रथम शब्द 'न' रहे और दूसरा कोई संज्ञा या विशेषण रहे तो उसे यह नाम दिया जाता है। यह 'न' व्यंजन के पूर्व 'अ' में और स्वर के पूर्व 'अन्' में बदल जाता है।

उदा० — न ब्राह्मणः — अ ब्राह्मणः
न सत्यः — असत्यः
न सत्यम — असत्यम
न अश्वः — अनश्वः
अन् + श्वः

Note:- प्र + आचार्यः — प्राचार्यः
प्रगतः आचार्यः {प्रादि तत्पुरुष}

द्वन्द्व समास — जब दो या अधिक शब्द साथ रखे जाते हैं जो च शब्द से जुड़े हुए थे। द्वन्द्व के भेद निम्न है—

(1) इतरेतर द्वन्द्व
(2) एकशेष द्वन्द्व
(3) समाहार द्वन्द्व

उदा०- रामश्च लक्ष्मणश्च — रामलक्ष्मणौ (दोनों पद प्रधान-इतरेतर)
रामश्च लक्ष्मणश्च भरतश्च — रामलक्ष्मणभरताः

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

मयूरी कुक्कुटौ — मयूरी च कुक्कुटश्च
आहारनिद्राभयम् — आहारश्च निद्रा च भयञ्च
पाणिपादम् — पाणी च पादौ च
सर्पनकुलम् — सर्पश्च नकुलम्
पितरौ / मातापितरौ — माता च पिता च
श्वसुरौ — श्वश्रूश्च श्वसुरश्च
ब्राह्मणौ — ब्राह्मणी च ब्रह्मणश्च
शिवश्च केशवश्च ← शिवकेशवौ

श्वसुर - ससुर
श्वश्रू - सास

बहुव्रीहि समास — जब समास में आये हुए शब्द किसी अन्य शब्द के विशेषण स्वरूप रहते हैं तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं अर्थात् प्रथम शब्द दूसरे शब्द का विशेषण है और दोनों मिलकर किसी अन्य शब्द का विशेषण है। इस समास में कोई पद प्रधान नहीं होता है।

Note: कर्मधारय समास में द्वितीय शब्द/पद विशेषण होता है और प्रथम शब्द उसकी विशेषता बताता है जबकि बहुव्रीहि समास प्रथम शब्द दूसरे शब्द की विशेषता तो बताता है किन्तु दोनों मिलकर किसी तीसरे शब्द के विशेषण होते हैं।

नोट →
पीताम्बरम् (कर्मधारय)
पीताम्बरः — विष्णु

उदा० —
बहुव्रीहि — बहुः व्रीहिः यस्य सः

जिसका - यस्य स

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

पीताम्बरः — पीतम् अम्बरं यस्य सः → विष्णु

चन्द्रशेखरः — चन्द्रः शेखरे यस्य सः → शिव

चन्द्रकान्ति — चन्द्रस्य कान्तिः इव कान्ति यस्य सः

चित्रगुः — चित्राः गावः यस्य सः।

ईश्वरकर्तृकः — ईश्वरः कर्ता यस्य सः → संसारः/मनुष्यः

सुशीलमातृकः — सुशीला माता यस्य सः → मनुष्य

दीपक कुमार शर्मा
8859637150
मथुरा वृन्दावन
दीपक कुमार शर्मा
DEEPAK KUMAR SHARMA
MATHURA VRINDAVAN- 8859637150
दीपक कुमार शर्मा
8859637150
मथुरा वृन्दावन

For n Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

संस्कृत में भूतकाल की क्रिया का बोध कराने के लिए तीन काल हैं –

(1) अनद्यतन भूत
(2) परोक्ष भूत
(3) सामान्य भूत

(1) अनद्यतन भूत – जो आज न हुआ हो।
(2) परोक्ष भूत – ऐसा अतीतकाल जो आँखों के सामने न हुआ हो।

दीपक कुमार शर्मा
8859637150
मथुरा वृन्दावन
दीपक कुमार शर्मा
DEEPAK KUMAR SHARMA
MATHURA VRINDAVAN- 8859637150
दीपक कुमार शर्मा
8859637150
मथुरा वृन्दावन

For B upta PDF"
by CamScanner

वाच्य

उक्त कर्ता → कर्तृ

अनुक्त कर्ता → कर्म / भाव

(1) कर्तृ वाच्य
(2) कर्म वाच्य
(3) भाव वाच्य

कर्तृ वाच्य

* कर्तृ वाच्य में कर्ता मुख्य होता है एंव क्रिया कर्ता के अनुसार चलती है।
कर्ता प्रथमा विभक्ति में एंव कर्म द्वितीया विभक्ति में होता है।



उदा:-
सः पुस्तकं पठति।
अहं पुस्तकं पठामि।

कर्म वाच्य

* कर्म वाच्य में कर्म मुख्य होता कर्म के अनुसार ही कर्ता का वचन एंव पुरूष होता है।
कर्म वाच्य में कर्ता तृतीया विभक्ति में एंव कर्म प्रथमा विभक्ति में होता है।

उदा:-
(1) सः पुस्तकं पठति। (किम् पठति - क्या पढ़ता है)
तेन पुस्तकं पठ्यते। (कर्म वाच्य)

(2) अहं पुस्तकं पठामि।
मया पुस्तकं पठ्यते। (कर्म वाच्य)

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

भाव वाच्य

भाव वाच्य में कर्ता तृतीया विभक्ति में एवं अकर्मक क्रिया होने के कारण कर्म नहीं होगा क्रिया में प्रथम पुरुष एकवचन होगा।

उदा०*

(1) अहं गच्छामि। ~~कर्म~~ (कर्तृ वाच्य)
मया गम्यते। (भाव वाच्य)

(2) अहं विद्यालयं गच्छामि।
मया विद्यालयं गम्यते। (भाव वाच्य)

(3) रामः फलं खादति।
रामेण फलं खाद्यते। (भाव वाच्य)

(4) ते फलं खादन्ति।
तैः फलं खाद्यते। (भाव वाच्य)

(5) रामः पुस्तकं पठति।
रामेण पुस्तकं पठ्यते। (भाव वाच्य)

(6) रामः अश्वं ग्रामं नयति।
रामेण अश्वः ग्रामं नीयते। (भाव वाच्य)

(7) शोभा वेदपाठं करोति।
शोभया वेदपाठः क्रियते।

(8) रामः रावणं बाणेन हन्ति।
रामेण रावणः बाणेन हन्यते।

(9) सीता वृक्षं पश्यति।
सीतया वृक्षः दृश्यते।

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

विशेषः/

(10) बालः दुग्धं पिबति।
शिशुना/बालेन दुग्धं पीयते।

Note* प्रतीयते तिङीयते इति प्रत्ययः।

1*. सुप् + अन्त → सुबन्त → संज्ञा सर्वनाम आदि शब्दों से जुड़ते हैं।

2*. तिङ् + अन्त → तिङन्त → धातुओं से जुड़ते हैं।

प्रत्यय

* 'क्त' और 'क्तवतु' प्रत्यय भूतकाल में होते हैं।
  ↓ ↓
  'त' और 'तवत्' शेष रहता है।
* 'क्त' प्रत्यय का प्रयोग कर्म वाच्य एंव भाववाच्य में होता है।
* और 'क्तवतु' प्रयोग कर्तृ वाच्य में होता है।
* √गम् + क्त = गतः
* √गम् + क्तवतु = गतवान्
* सः विद्यालयं आगच्छत्।
  सः विद्यालयं गतवान्।
* 'तुमुन्' ~~और~~ प्रत्यय को अथवा के लिए के अर्थ में प्रयोग होता है और 'तुमुन्' का 'तुम्' शेष होता है।
* √गम् + तुमुन् → गन्तुम्
* √कृ + तुमुन् → कर्तुम्

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

* क्त्वा प्रत्यय 'कर' या 'करके' के अर्थ में प्रयोग होता है।

* √गम + क्त्वा = गत्वा

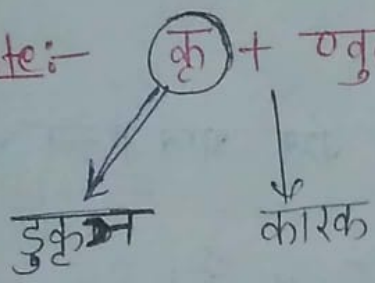
* अनीयर् प्रत्यय का प्रयोग चाहिए के अर्थ में होता है। अनीय शेष बचता है।

√गम + अनीयर् = गमनीय

* तव्यत् प्रत्यय का प्रयोग

√गम + तव्यत् = गन्तव्य

Note:- कृ + ण्वुल



For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

धातु	क्त	क्तवतु	तुमुन्	तव्यत्	कर्तृवाच्य / कर्मवाच्य / भाववाच्य
√कथ् (कहना)	काथितः	कथितवान्	कथितुम् / कथयितुम्	कथितव्यम् / कथयितव्यम्	कथयित्वा / कथ्यते / कथ्यते
√कृ करना	कृतः	कृतवान्	कृत्वा	कर्तुम्	कर्त्तव्यम् / क्रियते
√गम् (जाना)	गतः	गतवान्	गत्वा	गन्तुम्	गन्तव्यम् / गम्यते
√दा (देनेकेलिए)	दत्तः	दत्तवान्	दत्वा	दातुम्	दातव्यम् / दीयते
√पठ् (पढ़ना)	पठितः	पठितवान्	पठित्वा	पठितुम्	पठितव्यम् / पठ्यते
√पा (पीनेकेअर्थमें)	पीतः	पीतवान्	पीत्वा	पातुम्	पातव्यम् / पीयते
√प्रच्छ (पूछनेकेअर्थ)	पृष्टः	पृष्टवान्	पृष्ट्वा	प्रष्टुम्	प्रष्टव्यम् / प्रच्छ्यते
√वच् (बोलना)	उक्तः	उक्तवान्	उक्त्वा	वक्तुम्	वक्तव्यम् / उच्यते
√भू (होना)	भूतः	भूतवान्	~~भूक्त्वा~~ भूत्वा	भवितुम्	भवितव्यम् / भूयते

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"
Scanned by CamScanner

सभी Subject व Exam से संबंधित PDF यहां से Download करें

Nitin Gupta Notes PDF

MP GK PDF

Current Affairs PDF

Rajsthan GK PDF

CTET PDF

SSC PDF

RRB PDF

UP GK PDF

MPPSC PDF

Enviornment PDF

Polity PDF

History PDF

Geography PDF

Science PDF

Economy PDF

Maths PDF

Reasoning PDF

Child Development and Pedagogy PDF

Computer PDF

BIHAR GK PDF

General English PDF

General Hindi PDF

Join Our Telegram Chanel For Free Study PDF

Join Telegram For PDF and Study Material

हमारी बेबसाइट की सभी PDF को हम अपने Telegram Group में भी आपको Available कराते हैं , जहां से आप इन्हें Download कर सकते हैं ! आप नीचे दी गई Link की सहायता से हमारे Telegram Group को Join कर सकते हैं !

- Join Here – नई PDF व अन्य Study Material पाने के लिये अब आप हमारे Telegram Channel को Join कर सकते हैं !



- Join Here – नई PDF व अन्य Study Material पाने के लिये अब आप हमारे Telegram Channel को Join कर सकते हैं !

ऐसी ही PDF के लिये Google पर Search करें – **"Nitin Gupta PDF"**